अल क़सीदः

ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम
की प्रशंसा में

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

AL-QASIDA

by

Hadhrat Mirza Ghulam Ahmad[as]

(in Hindi)

अल-क़सीदः

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : अल-क़सीद:
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक : अली हसन एम.ए., एच.ए.,
टाइप, सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) मार्च 2019 ई०
संख्या : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book : Al-Qasida
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator : Ali Hasan, M.A., H.A.,
Type Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
Edition : 1st Edition (Hindi) March 2019
Quantity : 1000
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian,
143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद अली हसन साहिब एम. ए. ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रीव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम. ए. और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम. ए. ने इसका रीव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सबको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल-क़सीद:

सम्पूर्ण संसार के मार्गदर्शक (पेशवा) और गौरव हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में

1

يَاعَيْنَ فَيْضِ اللّٰهِ وَالْعِرْفَانِ

يَسْعٰى اِلَيْكَ الْخَلْقُ كَالظَّمْاٰنِ

हे अल्लाह के फ़ैज़-व-इर्फ़ान (उपकार एवं अध्यात्म) के सागर !

लोग तेरी ओर प्यासों की तरह दौड़ते आ रहे हैं।

2

يَا بَحْرَ فَضْلِ الْمُنْعِمِ الْمَنَّانِ

تَهْوِىْ اِلَيْكَ الزُّمَرُ بِالْكِيْزَانِ

हे इनाम और एहसान करने वाले ख़ुदा के उपकार के सागर !

लोग गिरोह दर गिरोह तेरी ओर मश्कीज़े (घड़े) लिए प्यासों की भाँति दौड़े चले आ रहे हैं।

3

يَاشَمْسَ مُلْكِ الْحُسْنِ وَالْاِحْسَانِ

نَوَّرْتَ وَجْهَ الْبَرِّ وَالْعُمْرَانِ

हे हुस्न और एहसान की दुनिया के सूरज !

तूने सारी दुनिया को रोशन कर दिया है।

4

قَوْمٌ رَأَوْكَ وَاُمَّةٌ قَدْ اُخْبِرَتْ
مِنْ ذٰلِكَ الْبَدْرِ الَّذِىْ أَصْبَانِىْ

एक क़ौम ने तो तुझे देखा है और एक उम्मत ने उस चौदहवीं के चाँद की ख़बर सुनी जिसने मुझे (अपना) आशिक़ बना लिया है।

5

يَبْكُوْنَ مِنْ ذِكْرِ الْجَمَالِ صَبَابَةً
وَتَأَلُّمًا مِّنْ لَوْعَةِ الْهِجْرَانِ

वे तेरी मुहब्बत की याद में रोते हैं और (तेरी) जुदाई के ग़म से उनके आँसू बह रहे हैं।

6

وَأَرَى الْقُلُوْبَ لَدَى الْحَنَاجِرِ كُرْبَةً
وَأَرَى الْغُرُوْبَ تُسِيْلُهَا الْعَيْنَانِ

और मैं देखता हूँ कि दिल बेचैनी से गले तक आ गए हैं और आँखें आंसू बहा रही हैं।

7

يَامَنْ غَدَا فِىْ نُوْرِهٖ وَضِيَائِهٖ
كَالنَّيِّرَيْنِ وَنَوَّرَ الْمَلَوَانِ

हे वह हस्ती जो अपनी छटा और तेज में चाँद और सूरज के समान हो गई है और अपने नूर (ज्ञान) से रात और दिन को रोशन कर दिया है।

8

يَا بَدْرَنَا يَا اٰيَةَ الرَّحْمٰنِ
أَهْدَى الْهُدَاةِ وَ اَشْجَعَ الشُّجْعَانِ

हे हमारे चौदहवीं के चाँद ! हे रहमान ख़ुदा के निशान !
सब रहनुमाओं से बढ़कर और सब बहादुरों से निडर।

9

اِنِّيْ أَرَى فِيْ وَجْهِكَ الْمُتَهَلِّلِ
شَأْنًا يَّفُوْقُ شَمَائِلَ الْاِنْسَانِ

मैं तुझ में एक ऐसी विशेषता देखता हूँ
जो मानवीय विशेषताओं में सर्वोत्कृष्ट है।

10

وَقَدِ اقْتَفَاكَ اُوْلُو النُّهٰى وَ بِصِدْقِهِمْ
وَ دَعُوْا تَذَكُّرَ مَعْهَدِ الْاَوْطَانِ

बुद्धिमानों ने तुझे चुन लिया और तेरा अनुसरण किया और अपनी
निष्ठा के कारण उन्होंने अपने वतनों की याद भी भुला दी।

11

قَدْ اٰثَرُوْكَ وَفَارَقُوْا أَحْبَابَهُمْ
وَتَبَاعَدُوْا مِنْ حَلْقَةِ الْاِخْوَانِ

उन्होंने तुझे अपना लिया और दूसरों पर प्राथमिकता दी और
अपने मित्रों से अलग हो गए और भाई बन्दों से दूरी अपना ली।

12

قَدْ وَدَّعُوْا أَهْوَاءَهُمْ وَنُفُوْسَهُمْ
وَتَبَرَّءُوْا مِنْ كُلِّ نَشْبٍ فَانِ

उन्होंने अपनी इच्छाओं और इरादों को बिल्कुल छोड़ दिया
और हर प्रकार के नश्वर धन-दौलत से विमुख हो गए।

13

ظَهَرَتْ عَلَيْهِمْ بَيِّنَاتُ رَسُوْلِهِمْ
فَتَمَزَّقَ الْاَهْوَاءُ كَالْاَوْثَانِ

जब उन पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खुले-खुले
और रोशन सबूत ज़ाहिर हुए तो उनकी
कामवासनाएँ बुतों (अर्थात् पुतले) की तरह टुकड़े-टुकड़े हो गईं।

14

فِيْ وَقْتِ تَرْوِيْقِ اللَّيَالِيْ نُوِّرُوْا
وَاللّٰهُ نَجَّاهُمْ مِّنَ الطُّوْفَانِ

वे घोर अन्धकार के समय अन्धविश्वास से मुक्ति दिलाए गए
और अल्लाह तआला ने उन्हें अन्धकार के तूफ़ान से बचा लिया।

15

قَدْ هَاضَهُمْ ظُلْمُ الْاُنَاسِ وَضَيْمُهُمْ
فَتَثَبَّتُوْا بِعِنَايَةِ الْمَنَّانِ

मुख़ालिफ़ लोगों के ज़ुल्म-व-सितम ने उन्हें मिटा डालने की कोशिश की।
फिर भी वे मुहसिन ख़ुदा की कृपा से अपने इरादे पर अटल रहे।

16

نَهَبَ اللِّئَامُ نُشُوْبَهُمْ وَعِقَارَهُمْ
فَتَهَلَّلُوْا بِجَوَاهِرِ الْفُرْقَانِ

ओछे और दुराचारियों ने उनकी धन-सम्पदा को लूट लिया, मगर फ़ुर्क़ान (अर्थात् क़ुर्आन मजीद) के अनमोल मोती पाकर उनके चेहरे ख़ुशी से चमक उठे।

17

كَسَحُوْا بُيُوْتَ نُفُوْسِهِمْ وَتَبَادَرُوْا
لِتَمَتُّعِ الْاِيْقَانِ وَالْاِيْمَانِ

उन्होंने अपने दिलों को अच्छी तरह साफ़ किया और यक़ीन (दृढ़विश्वास) और ईमान की दौलत से फ़ायदा उठाने के लिए तेज़ी से आगे बढ़े।

18

قَامُوْا بِاِقْدَامِ الرَّسُوْلِ بِغَزْوِهِمْ
كَالْعَاشِقِ الْمَشْغُوْفِ فِي الْمَيْدَانِ

वे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व वसल्लम की पैरवी में एक आशिक़ के समान अपने अभियान में डट गए।

19

فَدَمُ الرِّجَالِ لِصِدْقِهِمْ فِيْ حُبِّهِمْ
تَحْتَ السُّيُوْفِ اُرِيْقَ كَالْقُرْبَانِ

तो उन लोगों के ख़ून उनकी सत्यनिष्ठा और प्रेम के कारण तलवारों के नीचे कुर्बानियों की तरह बहाए गए।

20

جَاءُوْكَ مَنْهُوْبِيْنَ كَالْعُرْيَانِ
فَسَتَرْتَهُمْ بِمَلَاحِفِ الْاِيْمَانِ

वे तेरे पास लुटे-पिटे नंगे आदमी की तरह आए तो
तूने उन्हें ईमान की चादरें ओढ़ा दीं।

21

صَادَفْتَهُمْ قَوْمًا كَرَوْثٍ ذِلَّةً
فَجَعَلْتَهُمْ كَسَبِيْكَةِ الْعِقْيَانِ

तूने उन्हें गोबर की तरह नीच क़ौम पाया।
फिर उन्हें शुद्ध सोने की भाँति बना दिया।

22

حَتَّى انْثَنٰى بَرٌّ كَمِثْلِ حَدِيْقَةٍ
عَذْبِ الْمَوَارِدِ مُثْمِرِ الْاَغْصَانِ

यहाँ तक कि अरब उस बाग़ के समान हो गया जिसके झरने
रुचिकर और मीठे हों और डालें फलों से लदी हुई।

23

عَادَتْ بِلَادُ الْعُرْبِ نَحْوَ نَضَارَةٍ
بَعْدَ الْوَجٰى وَالْمَحْلِ وَالْخُسْرَانِ

सूखा और तबाही के बाद अरब फिर से
हरा-भरा हो गया।

24

كَانَ الْحِجَازُ مُغَازِلَ الْغِزْلَانِ

فَجَعَلْتَهُمْ فَانِيْنَ فِي الرَّحْمَانِ

हिजाज़ के रहने वाले मृगनयनी स्त्रियों से व्यभिचार में डूबे थे।

तूने उन्हें रहमान ख़ुदा में लीन होने वाला बना दिया।

25

شَيْئَانِ كَانَ الْقَوْمُ عُمْيًا فِيْهِمَا

حَسْوُ الْعُقَارِ وَ كَثْرَةُ النِّسْوَانِ

दो बातें थीं जिनमें अरब क़ौम अंधी हो रही थी,

अर्थात् मज़े ले लेकर शराब पीना और बहुत सी स्त्रियाँ रखना।

26

أَمَّا النِّسَاءُ فَحُرِّمَتْ اِنْكَاحُهَا

زَوْجًا لَهُ التَّحْرِيْمُ فِي الْقُرْاٰنِ

औरतों के बारे में यह आदेश जारी हुआ कि उनका विवाह ऐसे व्यक्ति से

जिसका निषेध क़ुर्आन में आ गया है अवैध (हराम) कर दिया गया है।

27

وَجَعَلْتَ دَسْكَرَةَ الْمُدَامِ مُخَرَّبًا

وَأَزَلْتَ حَانَتَهَا مِنَ الْبُلْدَانِ

तूने शराबख़ानों को उजाड़ दिया

और शहरों से शराब की दुकानें हटा दीं।

28

كَمْ شَارِبٍ بِالرَّشْفِ دَنًّا طَافِحًا
فَجَعَلْتَهُ فِي الدِّيْنِ كَالنَّشْوَانِ

बहुत से थे जो मटके के मटके उड़ा जाते थे
तूने उन्हें धर्म का मतवाला बना दिया।

29

كَمْ مُحْدِثٍ مُسْتَنْطِقِ الْعِيْدَانِ
قَدْ صَارَ مِنْكَ مُحَدَّثَ الرَّحْمٰنِ

कितने ही नई-नई धुन बजाने वाले और नाचने गाने वाले थे जो तेरे अनुसरण से रहमान ख़ुदा से संवाद का सौभाग्य पाने वाले हो गए।

30

كَمْ مُسْتَهَامٍ لِلرَّشُوْفِ تَعَشُّقًا
فَجَذَبْتَهُمْ جَذْبًا اِلَى الْفُرْقَانِ

कितने ही ख़ूबसूरत और सुरीली औरतों के पीछे आवारा घूम रहे थे।
तूने उन्हें फ़ुर्क़ान (अर्थात् क़ुर्आन) की तरफ़ खींच लिया।

31

اَحْيَيْتَ أَمْوَاتَ الْقُرُوْنِ بِجَلْوَةٍ
مَاذَا يُمَاثِلُكَ بِهٰذَا الشَّانِ

तूने सदियों के मुर्दे अपने नूर से ज़िन्दा कर दिए।
कौन है जो इस शान में तेरा हमतुल्य हो सके ?

32

تَرَكُوا الْغَبُوْقَ وَبَدَّلُوْا مِنْ ذَوْقِهِ
ذَوْقَ الدُّعَاءِ بِلَيْلَةِ الْاَحْزَانِ

उन्होंने शाम की शराब छोड़ दी और उसके आनन्द को
ग़म की रातों में दुआ के आनन्द से बदल दिया।

33

كَانُوْا بِرَنَّاتِ الْمَثَانِيْ قَبْلَهَا
قَدْ اُحْصِرُوْا فِيْ شُحِّهَا كَالْعَانِيْ

इससे पहले वे दो तारों (अर्थात् सारंगियों की साज़ और गानों की आवाज़)
के सुरों की चाहत में क़ैदियों के समान गिरफ़्तार थे।

34

قَدْ كَانَ مَرْتَعُهُمْ أَغَانِيْ دَائِمًا
طَوْرًا بِغِيْدٍ تَارَةً بِدِنَانِ

उनके भोग-विलास का मैदान हमेशा ही राग-रंग था। कभी तो वे सुन्दर
और नाज़ुक स्त्रियों से जी बहलाते और कभी शराब से।

35

مَا كَانَ فِكْرٌ غَيْرَ فِكْرِ غَوَانِيْ
أَوْ شُرْبِ رَاحٍ أَوْ خَيَالِ جِفَانِ

उन्हें सुन्दर नाचने-गाने वाली औरतों या शराब और उसके प्यालों के
सिवा और कोई चिन्ता न थी।

36

كَانُوْا كَمَشْغُوْفِ الْفَسَادِ بِجَهْلِهِمْ

رَاضِيْنَ بِالْاَوْسَاخِ وَالْاَدْرَانِ

वे अपनी उजड्डता के कारण लड़ाई-झगड़े के शौक़ीन थे और मैल-कुचैल एवं गन्दगी पर खुश थे।

37

عَيْبَانِ كَانَ شِعَارَهُمْ مِنْ جَهْلِهِمْ

حُمْقُ الْحِمَارِ وَ وَثْبَةُ السِّرْحَانِ

उनकी मूर्खता के कारण उनमें दो दोष थे, (1) गधे की तरह अड़ना (2) भेड़िये की तरह हमला करना।

38

فَطَلَعْتَ يَاشَمْسَ الْهُدٰى نُصْحًا لَّهُمْ

لِتُضِيْئَهُمْ مِنْ وَّجْهِكَ النُّوْرَانِيْ

अत: हे मार्गदर्शन के सूरज ! तू उनकी भलाई के लिए उदय हुआ ताकि अपने प्रकाशमान चेहरे से उन्हें रौशन कर दे।

39

اُرْسِلْتَ مِنْ رَّبٍّ كَرِيْمٍ مُّحْسِنٍ

فِي الْفِتْنَةِ الصَّمَّاءِ وَالطُّغْيَانِ

तू महान कृपालु और उपकारी ख़ुदा की ओर से भयावह उपद्रव और उद्दण्डता के चर्मोत्कर्ष के समय भेजा गया।

40

يَـا لَلْفَتٰى مَا حُسْــنُهٗ وَ جَمَالُهٗ
رَيَّاهُ يُصْبِى الْقَلْبَ كَالرَّ يْحَانِ

वाह ! क्या ही ख़ूबसूरत और सुन्दर छवि वाला जवां मर्द (योद्धा) है !
जिसकी सुन्दरता दिल को एक सुगन्धित पौधे की भाँति मोह लेती है।

41

وَ جْـهُ الْمُهَيْمِنِ ظَاهِرٌ فِىْ وَ جْهِهٖ
وَ شُـئُوْ نُهٗ لَمَعَتْ بِهٰذَا الشَّـانِ

उसकी मुखकांति से ख़ुदा का तेज प्रकट होता है और
उसके इस तेज से ख़ुदा की विशेषताएं चमक रही हैं।

42

فَـلِذَا يُحَبُّ وَ يَسْـتَحِقُّ جَمَالُهٗ
شَـغَفًا ۢ بِهٖ مِنْ زُمْرَةِ الْاَخْدَانِ

इसीलिए तो वह अत्यन्त प्रिय है और उसकी सुन्दर छवि इस योग्य है कि
सदाचारी मित्रों (अर्थात् ऋषियों, मुनियों और अवतारों) के गिरोह में से
उससे असीम प्रेम किया जाए।

43

سُـجُحٌ كَرِ يْمٌ ۢ بَاذِلٌ خِـلُّ التُّقٰى
خِرْقٌ وَّ فَاقَ طَوَاۤىِٕـفَ الْفِتْيَانِ

वह सुशील, सुप्रतिष्ठित, दानवीर और संयमियों का मित्र है
और ऐसी विशेषताएँ रखने वालों में से सबसे बढ़कर है।

44

فَاقَ الْوَرٰى بِكَمَالِهٖ وَجَمَالِهٖ

وَجَلَالِهٖ وَجَنَانِهِ الرَّيَّانِ

वह अपनी विशेषता, छवि, प्रताप (रौब)

और हमदर्दी में सारी सृष्टि से बढ़कर है।

45

لَا شَكَّ أَنَّ مُحَمَّدًا خَيْرُ الْوَرٰى

رِيْقُ الْكِرَامِ وَنُخْبَةُ الْاَعْيَانِ

निस्सन्देह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ और

प्रतिष्ठितों के प्रतिष्ठित और पुण्यात्माओं (मुक़द्दसों) के पुण्यात्मा हैं।

46

تَمَّتْ عَلَيْهِ صِفَاتُ كُلِّ مَزِيَّةٍ

خُتِمَتْ بِهٖ نَعْمَاءُ كُلِّ زَمَانِ

हर प्रकार की श्रेष्ठता की विशेषताएं उस पर पूर्णरूप से पायी गयीं

और उस पर हर युग की नेमतें समाप्त हो गईं।

47

وَاللّٰهِ اِنَّ مُحَمَّدًا كَرِدَافَةٍ

وَبِهِ الْوُصُوْلُ بِسُدَّةِ السُّلْطَانِ

ख़ुदा की क़सम ! निस्सन्देह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

(ख़ुदा के) नायब की तरह हैं और अब उन्हीं के माध्यम से ख़ुदा की

चौखट तक रसाई हो सकती है।

48

هُـوَ فَخْـرُ كُلِّ مُطَهَّرٍ وَّ مُقَدَّسٍ
وَبِهٖ يُبَاهِی الْعَسْكَرُ الرُّوْحَانِیْ

वह प्रत्येक शुद्धात्मा और पवित्रात्मा का गर्व है और रूहानी
(आध्यात्मिक) लोगों का गिरोह उसी पर गर्व करता है।

49

هُوَ خَـيْرُ كُلِّ مُقَرَّبٍ مُّتَقَدِّمٍ
وَالْفَضْـلُ بِالْخَيْرَاتِ لَا بِزَمَانٖ

वह हर गुज़रे हुए मुक़र्रब (सानिध्यप्राप्त) से बढ़कर है और यह श्रेष्ठता
श्रेष्ठतम् कार्यों की दृष्टि से है न कि युग की।

50

وَالطَّلُّ قَدْ يَبْدُوْ أَمَامَ الْوَابِلِ
فَالطَّـلُّ طَلٌّ لَيْسَ كَالتَّهْتَانِ

हल्की फुहार मूसलाधार वर्षा से पहले होती है
और हल्की फुहार मूसलाधार वर्षा के समान नहीं हो सकती।

51

بَطَلٌ وَّحِيْدٌ لَاتَطِيْشُ سِهَامُهٗ
ذُوْ مُصْمِيَاتٍ مُّوْبِقُ الشَّيْطَانِ

वह अद्वितीय सूरमा है जिसके तीर लक्ष्य से कभी नहीं भटकते। वह
अचूक निशानों वाला (और) शैतान का जड़ से विनाश करने वाला है।

52

هُوَ جَنَّـةٌ اِنِّیۡ أَرٰی أَثْمَارَهٗ
وَقُطُوْفَـهٗ قَدْ ذُلِّلَـتْ لِجَنَانِیۡ

वह एक सुखद उपवन है। मैं देखता हूँ कि उसके फल
और गुच्छे मेरे दिल की ओर झुका दिए गए हैं।

53

أَلْفَيْتُهٗ بَحْرَ الْحَقَايِقِ وَالْهُدٰی
وَرَأَيْتُـهٗ كَالدُّرِّ فِی اللَّمَعَانِ

मैंने उसको ठोस सच्चाइयों और शिक्षाओं का सागर पाया
और चमक-दमक में उसे मोतियों के समान देखा।

54

قَدْ مَاتَ عِيْسٰی مُطْرِقًا وَّنَبِيُّنَا
حَیٌّ وَّ رَبِّیۡ اِنَّـهٗ وَافَانِیۡ

ईसा[अ] तो सिर झुकाकर (अर्थात् प्राकृतिक विधानानुसार-अनुवादक)
मृत्यु पा गए और हमारा नबी[स.अ.व.] जीवित है और ख़ुदा की क़सम!
उसने मुझसे भेंट भी की है।

55

وَاللّٰهِ اِنِّیۡ قَدْ رَأَيْـتُ جَمَالَهٗ
بِعُيُوْنِ جِسْمِیۡ قَاعِدًا بِمَكَانِیۡ

ख़ुदा की क़सम! मैंने उसके सौन्दर्य को अपनी भौतिक
आँखों से अपने मकान पर बैठे हुए देखा है।

56

هَا اِنْ تَظَنَّيْتَ ابْنَ مَرْيَمَ عَائِشًا
فَعَلَيْكَ اِثْبَاتًا مِّنَ الْبُرْهَانِ

देख! यदि तू भी ईसा इब्ने मरयम को जीवित समझता है
तो प्रमाण (दलील) द्वारा सिद्ध करना तुझ पर अनिवार्य है।

57

أَفَانْتَ لَاقَيْتَ الْمَسِيْحَ بِيَقْظَةٍ
أَوْ جَاءَكَ الْاَنْبَاءُ مِنْ يَّقْظَانِ

क्या तुम जागने की अवस्था में मसीह[अ॰] से मिल चुके हो
या किसी जीते-जागते ने (देखकर) तुम्हें यह ख़बर दी है कि वह ज़िन्दा हैं।

58

اُنْظُرْ اِلَى الْقُرْاٰنِ كَيْفَ يُبَيِّنُ
أَفَانْتَ تُعْرِضُ عَنْ هُدَى الرَّحْمٰنِ

क़ुर्आन को (खोलकर) देखो कि वह कैसे स्पष्ट तौर पर उसकी
मृत्यु वर्णन कर रहा है। क्या तुम रहमान ख़ुदा की खुली-खुली हिदायत
से मुँह फेरते हो।

59

فَاعْلَمْ بِاَنَّ الْعَيْشَ لَيْسَ بِثَابِتٍ
بَلْ مَاتَ عِيْسٰى مِثْلَ عَبْدٍ فَانِ

जान लो कि यह जीवन नश्वर है और ईसा एक
नश्वर इन्सान की भाँति मर चुके हैं।

60

وَ نَبِيُّنَـا حَيٌّ وَّ اِنِّيْ شَـاهِدٌ
وَقَدِ اقْتَطَفْتُ قَطَائِفَ اللُّقْيَانِ

और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवित हैं और मैं (इस बात का) गवाह हूँ और मैंने आप स.अ.व. की मुलाक़ात का सौभाग्य पाया है।

61

وَرَأَيْتُ فِيْ رَيْعَانِ عُمْرِيْ وَجْهَهٗ
ثُـمَّ النَّـبِيُّ بِيَقْظَـتِيْ لَاقَـانِيْ

मैंने तो अपनी युवावस्था में ही उनका पवित्र चेहरा देखा। फिर मेरे जागने की अवस्था में भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे मुलाक़ात का सौभाग्य प्रदान किया।

62

اِنِّيْ لَقَـدْ اُحْيِيْتُ مِـنْ اِحْيَائِهٖ
وَاهًـا لِاِعْجَازٍ فَمَـا اَحْيَانِيْ

निस्सन्देह मैं आप के ज़िन्दा करने से ही ज़िन्दा हुआ हूँ। सुब्हानल्लाह! क्या चमत्कार है और आप ने क्या ही अच्छा मुझे जीवित किया है।

63

يَا رَبِّ صَلِّ عَلٰى نَبِيِّكَ دَائِمًا
فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَـا وَبَعْثٍ ثَانٍ

हे मेरे रब्ब ! अपने नबी पर हमेशा दरूद भेज,
इस लोक में भी और परलोक में भी।

64

يَا سَيِّدِى قَدْ جِئْتُ بَابَكَ لَاهِفًا
وَالْقَوْمُ بِالْاِكْفَارِ قَدْ اٰذَانِىْ

हे मेरे आक़ा! मैं इस हाल में तेरे द्वार पर सताया हुआ फ़रियादी बनकर आया हूँ कि लोगों ने काफ़िर कहकर मुझे बहुत दुःख पहुँचाया है।

65

يَفْرِىْ سِهَامُكَ قَلْبَ كُلِّ مُحَارِبٍ
وَيَشُجُّ عَزْمُكَ هَامَةَ الثُّعْبَانِ

तेरे तीर हर दुश्मन के दिल को चीर देते हैं
और तेरा प्रण अजगर के सर को कुचल डालता है।

66

لِلّٰهِ دُرَّكَ يَا اِمَامَ الْعَالَمِ
أَنْتَ السَّبُوْقُ وَسَيِّدُ الشُّجْعَانِ

हे सम्पूर्ण संसार के मार्गदर्शक (इमाम) तुझ पर धन्य-धन्य !
तू सबसे बढ़कर है और सब बहादुरों का सरदार है।

67

اُنْظُرْ اِلَىَّ بِرَحْمَةٍ وَّتَحَنُّنٍ
يَا سَيِّدِىْ أَنَا أَحْقَرُ الْغِلْمَانِ

तू मुझ पर करुणा एवं सहानुभूति की दृष्टि डाल।
हे मेरे आक़ा! मैं (तेरा) एक बहुत ही तुच्छ ग़ुलाम हूँ।

68

يَاحِبِّ اِنَّكَ قَدْ دَخَلْتَ مَحَبَّةً

فِيْ مُهْجَتِيْ وَمَدَارِكِيْ وَجَنَانِيْ

हे मेरे प्यारे ! तेरी मुहब्बत मेरे ख़ून में, मेरी जान में,

मेरे हवास में और मेरे दिल में रच बस गई है।

69

مِنْ ذِكْرِ وَجْهِكَ يَاحَدِيْقَةَ بَهْجَتِيْ

لَمْ أَخْلُ فِيْ لَحْظٍ وَّلَا فِيْ اٰنِ

हे मेरे हर्षोल्लास के सुखद बाग़ ! मैं एक पल

के लिए भी तेरी याद से ख़ाली नहीं रहता।

70

جِسْمِيْ يَطِيْرُ اِلَيْكَ مِنْ شَوْقٍ عَلَا

يَالَيْتَ كَانَتْ قُوَّةُ الطَّيَرَانِ

मेरा शरीर पूरी मुहब्बत और लगाव के जोश से तेरी ओर

उड़ना चाहता है। काश! कि मुझ में उड़ने की शक्ति होती।

(आइना कमालात-ए-इस्लाम पृष्ठ-590 से 594)